ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-1*February- 2018
Innovation The Research Concept

पारिवारिक जीवन पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव

सारांश

औद्योगीकरण ने पारिवारिक संगठन एवं संबंधों को विशेष रूप से प्रभावित किया/आजादी के बाद औद्योगीकरण का जो प्रसार हुआ है उसके फलस्वरूप समाज में संरचनात्मक सांस्कृतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोणों से जो व्यापक बदलाव आयें हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन की गति तीव्र है और नगरीय क्षेत्रों में अत्यधिक तीव्र/संयुक्त परिवार से अलग होने तथा अलग घर बनाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। शहरों के विस्तार और जीवन यापन के बढ़ते खर्च की वजह से तीन चार पीढ़ियों का एक साथ रहना कठिन भी हो गया है। विशाल परिवार जहाँ शोर शराबे के बीच अभिभावक बच्चों, चाचा–चाची, चचेरे भाई–बहन और दादा–दादी के एक ही छत के नीचे साथ–साथ रहते थे और आपस में भले ही लड़ते–भिड़ते हों, लेकिन दुनिया के सामने एकल प्रदर्शित करते थे। ऐसे परिवार अब हकीकत में कम फिल्मों, धारावाहिकों में ज्यादा दिखता है।

मुख्य शब्द : औद्योगिकीकरण, इंडस्ट्रियल रिवोल्यूशन, एकाकी परिवार, प्राथमिक सम्बन्धों, पैतृक व्यवसायों, सामाजिक सुरक्षा।

मोनिका गौतम
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
महाराजा बिजली पासी
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
आशियाना, लखनऊ

प्रस्तावना

''औद्योगिक शब्द उद्योगों से सम्बन्धित है। अतएव सर्वप्रथम यह जानना आवश्य है कि उद्योग इण्टस्ट्री क्या है? अंग्रेजी शब्द 'इण्डस्ट्री' लैटिन भाषा के मूल शब्द 'इण्डस्ट्रिया' से बना है जिसका अर्थ है 'कुशलता' अथवा 'उद्यम इसी आधार पर हम मनुष्य को उद्यमी या इण्डस्ट्रियस मैन कहते हैं औद्योगिक समाज–विज्ञान के अध्ययन का इतिहास अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैण्ड में हुई। औद्योगिक क्रान्ति 'इंडस्ट्रियल रिवोल्यूशन' के पश्चात प्रारम्भ होता है। इसी काल में विज्ञान और तकनीकी विकास के साथ–साथ नये–नये औद्योगिक उत्पादन केन्द्रों की स्थापना हो रही थी। मशीनीकरण और औद्योगिकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप नगरों का विकास भी तीव्रगति से होने लगा। इन नगरीय उत्पादन केन्द्रों में ग्रामीण जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग आकर बसने लगा। फलस्परूप संयुक्त परिवार–प्रणाली का विघटन प्रारम्भ हुआ और एकाकी परिवार होने लगा। औद्योगिकरण क परिणाम स्वरूप बेरोजगारी एवं आवास समस्या उत्पन्न हुयी तथा व्यक्तिवादी विचारधारा का उदय हुआ। परिवार व्यक्ति की प्रथम सामाजिक संस्था है। किसी व्यक्ति का व्यवसाय उसके लिए केवल जीवनयापन का एक तरीका मात्र ही नहीं है। क्योंकि व्यवसाय में वह अपने प्रतिदिन की जीवन का लगभग 1/3 समय व्यतीत करता है। इसके द्वारा (व्यवसाय) व्यक्ति की भेष–भूषा, व्यवहार, बातचीत, विवाह, मनोरंजन तथा अन्य सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति औद्योगिक रोजगार में आने के पश्चात धीरे–धीरे ग्रामीण परिवार के संगठन से अलग होकर नये एकांकी परिवार का सृजन करता है। जिसके अन्तर्गत उसका पत्नी तथा बच्चों के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो जाता है। ऐसी दशा में उसके परिवार के अतः व्यक्तित्व सम्बन्धों का स्वरूप कुछ भिन्न हो जाता है। ग्रामीण अंचल में पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वाह में तो परिवार के अन्य लोगों का सहयोग मिलता था। किन्तु औद्योगिक नगरीय क्षेत्रों में मुख्यता उत्तरदायित्वों का निर्वाहन करना पड़ता है।

औद्योगिक रोजगाररत श्रमिक अपने बच्चों की शिक्षा विवाह आदि के सन्दर्भ में ज्यादातर खुली सामाजिक व्यवस्था की ओर आकृष्ट रहते हैं जिसमें अर्जित पदों एवं भूमिकाओं को स्वीकार किया जाता है। अतः उनका दृष्टिकोण रूढ़िवादी एवं परम्परागत न होकर प्रगतिशील और उदार हो जाता है। औद्योगिक समाज में व्यक्तियों का आपस का सम्बन्ध अप्रत्यक्ष, जटिल एवं औपचारिक होता है।

वास्तव में संयुक्त परिवार जहां कहीं अपने मौलिक रूप में विद्यमान है वहीं औद्योगिक क्रान्ति के कारण संयुक्त परिवार दुर्बलता एवं विघटन की ओर

अग्रसर है। जिसके परिणाम स्वरूप इसमें परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। औद्योगीकरण एक गतिशील धारणा है जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध आर्थिक विकास से है। जिसके द्वारा प्राकृतिक शक्तियों का शोषण होता है। यंत्रों और मशीनों के अभाव में औद्योगिकरण की स्थापना नहीं की जा सकती है। औद्योगीकरण के द्वारा ही पुराने उद्योगों को पुनर्गठित किया जाता है और बड़े पैमाने के उद्योगों का विकास होता है तथा उत्पादित वस्तुओं की बिक्री का बाजार काफी व्यापक होता है। औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् विभिन्न कल कारखानों की स्थापना होने लगी। जिसके संचालन हेतु श्रम शक्ति की एक वृहद संख्या इसमें संलग्न हो गयी। उद्योग वाद में कार्य की स्थापना को निवास स्थान से पृथक कर दिया। फलस्वरूप औद्योगिक श्रमिक का अपने परिवार के सदस्यों से औपचारिक सम्बन्ध स्थापित होने लगा। औद्योगिक प्रकृति के अनुसार श्रमिकों के जीवन में भी परिवर्तन आने लगने से इन सन्दर्भों में 'स्वनेडर' ने लिखा है कि ––''हमारे परिवार की कार्य संरचना का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है। कार्यस्थल और आवास – गृह का अलग–अलग होना एक कृषक के विपरीत जो कि हमेश घर के समान ही कार्य करता था, लेकिन आधुनिक व्यक्ति के काम पर जाने का तात्पर्य है अपने परिवार को एक दिन में 8 घण्टे या अधिक समय के लिए छोड़ देना। इसके अतिरिक्त वह जो कुछ कार्य अपने कार्यस्थल पर करता है वह सामान्य रूप से परिवार के सदस्यों की कल्पना से बाहर का होता है। अथवा उस कार्य में परिवार वालों को अभिरूचि नहीं होता है। इस तरह एक बच्चा या किशोर या पत्नी व्यवसायिक दुनिया से लगभग पूरी तरह से अलग हो जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि पिता अपने पुत्र हेतु एक नमूना नहीं रह सकता या यह उसके लिए एक कठिन कार्य हो जाता है जिसका परिणाम यह होता है कि हमारे समाज में ही कुछ बच्चे अपने पिता के समान होने का प्रयत्न कर पाते हैं। दूसरा परिणाम यह होता है कि बच्चे अपने माता पर छोड़ दिये जाते हैं। परिवार में केवल वहीं एक सदस्य रह जाते हैं जो उन्हें प्यार दें उनकी देखरेख करे और उन्हें अनुशासित करें।

एक ओर परम्परावादी दृष्टिकोण के अनुसार इस नये परिवेश में परिवार की संस्था समाप्त होती जा रही है। परिवार के सदस्यों के प्राथमिक सम्बन्धों में कमी होती जा रही है।

परिवार के अनेक कार्यों को अब दूसरी समितियां करने लगी हैं जिस कारण इसका महत्व घट गया है। नगरों, कारखानों में पत्नी और पति दोनों ही नौकरी करते हैं। जिस कारण बच्चों पर माता–पिता का पूरी तरह से नियंत्रण नहीं हो पाता है। बच्चों की देखभाल ''आया'' के माध्यम से होने से बच्चों का माता–पिता से लगाव कम होने लगा है। बच्चा अपने आपको बहूत अकेला महसूस करने लगता है औ उसके व्यक्तित्व का पूर्णरूप से विकास नहीं हो पाता।

दूसरी ओर औद्योगीकरण के कारण स्त्रियां भी शिखा प्राप्त करने लगी हैं। उन्हें घर से बाहर आने–जाने की स्वतंत्रता है, पर्दा–प्रथा धीरे–धीरे समाप्त हुई है। नारी भी आर्थिक क्रियाओं में भाग लेने लगी हैं। इस कारण उसकी स्थिति में काफी सुधार हुआ है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने विवाह संस्था को भी प्रभावित किया है। पहले विवाह एक धार्मिक संस्कार माना जाता था, किन्तु अब इसमें समझौते के तत्वों का समावेश हो गया है। विवाह एक अटूट बन्धन, जन्म–जन्मान्तर का सम्बन्ध नहीं रहा बल्कि तलाकों की संख्या में दिन–प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। बाल विवाहों के स्थान पर विलम्ब विवाहों को पसन्द किया जाने लगा है। अंतर्जातीय विवाहों को घृणा की दृष्टि से नहीं देखा जाता है शिक्षा के प्रसार के कारण प्रेम–विवाहों का भी प्रचलन बढ़ रहा है। अब विवाह को एक अनिवार्य संस्कार नहीं माना जाता है। आजकल अविवाहित रहना कोई बुरा नहीं समझा जाता है। शिक्षा के प्रसार, संयुक्त परिवारों का विघटन और पारिवारिक नियंत्रण में कमी के कारण व्यक्तिवाद की भावना का विकास हुआ है।

औद्योगीकरण के कारण धार्मिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ा है। फैक्टरियों में विभिन्न जातियों और धर्मों के लोग एक समान्य कार्य करते हैं। इस प्रकार धार्मिक कट्टरता समाप्त हो रही है। पुरानी रूढ़ियां समाप्त होने लगी है। औद्योगीकरण के कारण वैज्ञानिक आविष्कारों और प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन मिला है। जिसके फलस्वरूप अन्ध विश्वास नष्ट हुआ है और लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ है। औद्योगीकरण के कारण समाज में धर्म का महत्व कम हो रहा है। औद्योगीकरण के कारण धर्म के साथ–साथ जाति का भेदभाव भी समाप्त हो रहा है। क्योंकि फैक्टिरियों में एक ही सान पर सब जातियों के श्रमिक कार्य करते हैं, जिस कारण अस्पृश्यता दूर हो रही है। इसके कारण व्यावसायिक गतिशीलता बढ़ी है। जाति से सम्बन्धित पैतृक व्यवसायों की धारणा नष्ट हो गयी। धन का महत्व बढ़ गया है। जन्म के आधार पर सर्वश्रेष्ठ होने का दावा समाप्त हो गया है। अब जाति व्यवस्था का स्थान वर्ण व्यवस्था ग्रहण कर रही है।

औद्योगीकरण के कारण राज्य के स्वरूप और कार्यों का विस्तार हुआ है। राज्य को पहले की अपेक्षा अधिक कार्य करने पड़ते हैं। श्रमिकों को पूंजीपतियों के शोषण से बचाने के लिए राज्य को अनेक श्रमिक कानूनों का निर्माण करना पड़ता है। स्त्रियों एवं बालकों के सम्बन्ध में कानून बनाकर उनके हितों की रक्षा करनी पड़ी है। राज्य द्वारा समाज कल्याण और सामाजिक सुरक्षा की अनेक योजनाओं को संचालित करना पड़ता है। औद्योगिक आविष्कारों के कारण राज्य का सैनिक संगठन पहले की अपेक्षा परिवर्तित हुआ है। पैदल सेना की अपेक्षा वायु सेना और जल सेना का महत्व बढ़ गया है। इसके कारण राज्य के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की विचार धाराओं का जन्म हुआ है। साम्यवाद और समाजवाद की विचारधारायें पूर्णतः श्रमिकों के हित पर आधारित है। अनेक देशों में श्रमिकों ने अपने सरकारों की भी स्थापना कर ली है। औद्योगीकरण के कारण ग्रामीण कुटीर उद्योग धन्धे नष्टप्रायः हो गये हैं। मिलों द्वारा निर्मित माल सस्ता होता है और देखने में भी सुन्दर होता है। इस कारण कुटीर उद्योगों का विनाश हो गया है। इसके कारण ग्रामीण समुदायों की शिक्षित एवं सम्पन्न जनसंख्या ग्राम छोड़ कर नगरों की ओर जा रही है। ग्रामीण समुदायों पर

नगरीकरण का प्रभाव भी औद्योगीकरण के कारण पड़ रहा है। श्रमिक जब नगरों से ग्रामों में अपने घर जाते हैं तो अपने बहुत सारी नगरीय विशेषताओं को ले जाते हैं। आज ग्रामों में भी उन चीजों का प्रयोग होने लगा है, जिनका उपयोग अभी तक केवल नगर निवासी ही करते थे। ग्रामीण समुदाय में औद्योगीकरण के कारण नगरीय सभ्यता के तत्व पाये जाने लगे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. औद्योगिक कार्य के कारण पारिवारिक संरचना एवं प्रकार्यों पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन।
2. औद्योगिक कार्य का श्रमिकों के व्यवहार विचार एवं जीवन पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन।
3. औद्योगिक कार्य के परिणाम स्वरूप ग्रामीण जीवन से श्रमिक का सम्बन्ध टूटने एवं औद्योगिक जीवन के निर्माण का अध्ययन।

उपकल्पना

1. औद्योगीकरण के कारण परिवार की परम्परागत मान्यताओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ।
2. औद्योगीकरण के कारण वैवाहिक मूल्यों में परिवर्तन।
3. औद्योगीकरण के कारण शैक्षिक स्तर में सुधार।
4. औद्योगीकरण आदेश प्रतिमान को परिवर्तित कर रहे हैं।

औद्योगीकरण की परिभाषा

औद्योगीकरण की निम्न परिभाषा दी गयी है।

गेराल्ड ब्रीज के अनुसार

''औद्योगीकरण व क्रिया है जो किसी समाज के न केवल नगरीकरण की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। बल्कि वह वहां के आर्थिक विकास को भी निर्देशित करता है। किसी समाज में औद्योगीकरण का प्रथम चरण छोटी–छोटी मशीनों के विकास पर बल देता है। जबकि अन्तिम चरण बड़ी–बड़ी मशीनों के विकास पर ही केन्द्रित होता है''।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार

''औद्योगीकरण से अभिशाप बड़े–बड़े उद्योगों के विकास और छोटे तथा कुटीर उद्योगों के स्थान पर बड़े पैमाने की मशीनों की व्यवस्था है''।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में औद्योगीकरण का पारिवारिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। देश में दिन प्रतिदिन बढ़ती औद्योगीकरण की प्रक्रिया है। जो सामाजिक आर्थिक ढॉचे को भी परिवर्तित कर रही है। जिसका प्रभाव परिवार पर पड़ रहा है। औद्योगिक रोजगार की सम्भावनाओं से आकर्षित होकर व्यक्ति कृषि परक रोजगार से दूर होकर औद्योगिक कार्य में रत हो जा रहा है। व्यक्ति प्रारम्भ में जब रोजगार हेतु औद्योगिक नगरों की ओर प्रस्थान करते हैं तो उसका ध्यान औद्योगिक कार्य प्राप्ति पर ही केन्द्रित रहता है। कालान्तर में आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने के पश्चात वह ग्रामीण परिवार में वापस जाने की आशा करता है। किन्तु धीरे–धीरे औद्योगिक कार्य में दक्ष हो जाने तथा औद्योगिक नगरीय जीवन की सुख–सुविधाओं के अर्जन से उसके रहन–सहन का तौर तरीका बदल जाता है तथा उसकी मनोवृत्ति में परिर्वतन आ जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Coplaw. T., The Sociology of work. Minneapolis. University of Minnesota. Press, 1954*
2. *Friedmann, G., Industrial Society, New yark, Free Press, 1956*
3. *Finley, W.W., etal., Human Behaviour in Industry, New yark, MC-grow Hill, 1954,*
4. *Moore, W.E. Industrial Pelations and the Social order, New yark, Macmillan 1951,*
5. *Myers, Industrial Relatios in India.*
6. *Parsons, T. and Smelser, N.J., Economy and*